मूल विना वैराट ऊभो, एम कहे सहु संसार।
तो भरमना जे पिंड पोते, ते केम कहिए आकार।। २९ ।।

यह विराट (ब्रह्माण्ड) बिना जड़ के खड़ा है, ऐसा सारी दुनियां के लोग कहते हैं। जो स्वयं ही भ्रम का तन हो, उसे आकार क्यों कहा जाए?

आकार न कहिए तेहेने, जेहेनो ते थाय भंग।
काल ते निराकार पोते, आकार सच्चिदानंद।। ३० ।।

जो मिटने वाला है उसे आकार नहीं कहना चाहिए। समय के अनुसार महाप्रलय में ब्रह्माण्ड का नाश हो जाता है। इसलिए वह निराकार है। सच्चिदानन्द पूर्ण-ब्रह्म जो अखण्ड है उसको आकार (साकार) कहना चाहिए।

मृगजल द्रष्टें न राचिए, जेहेनूं ते नाम परपंच।
ए छल छे माया तणो, रच्यो ते अवलो संच।। ३१ ।।

यह सारा संसार मृग जल (मृग तृष्णा) के समान है। इसमें मगन नहीं होना चाहिए। इसका तो नाम ही झूठा (सपना) है। यह सब माया का जाल है, जिसने सच को भी उल्टा कर रखा है।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १५८ ।।

वेदनी जाली

वेद मोटो कोहेडो, जेहेनी गूंथी ते झीणी जाल।
कांईक संखेपे कही करीं, दऊं ते आंकडी टाल।। १ ।।

वेद का ज्ञान सबसे बड़ी धुन्ध (कोहरा) है, जिसने बड़ी बारीकी से जाल गूंथा है। श्रीजी कहते हैं कि इसका थोड़ा सा वर्णन करके उलझन ही मिटा देता हूं।

वैराट आकार सुपननो, ब्रह्मा ते तेहेनी बुध।
मन नारद फरे मांहें, वेदे बांध्या बंध वेसुध।। २ ।।

विराट का आकार (रूप) सपने का है। ब्रह्मा इसकी बुद्धि है और नारद मन हैं। यह चारों ओर घूमता है। इस तरह से वेदों ने बन्धन बांधकर सबको बेहोश कर रखा है, अर्थात् स्पष्ट ज्ञान नहीं दिया है।

लगाड्या सहु रब्दे, व्याकरण वाद अंधकार।
एणी बुधे सहु वेसुध कीधां, विवेक टाल्या विचार।। ३ ।।

वेदों ने सबको झगड़े में डाल दिया है। पण्डित जन व्याकरण के वाद-विवाद में अंधेरे में भटकते हैं। इस तरह की बुद्धि ने सबको बेसुध कर रखा है। सोचने की शक्ति (Thinking Power) विवेक को वेदों ने समाप्त कर दिया है।

बंध बांध्या वेदव्यासे, वस्त मात्रना नाम बार।
ते वाणी वखाणी व्याकरणनी, छलवा आ संसार।। ४ ।।

वेदव्यास ने एक "अखर" (अक्षर) के ऊपर बारह मात्राएं लगाकर, उसके बारह रूप बनाकर बन्ध बांधे हैं और संसार को ठगने के लिए व्याकरण की वाणी का बखान किया है।

Nijanand App

बारे गमां बोलतां, एक अखर एक मात्र।
ते बांधी बत्रीस श्लोकमां, एवो छल कीधो छे सास्त्र।। ५ ।।

शास्त्रकारों ने एक अक्षर पर एक मात्रा लगा दी तो अक्षर बारह तरह से शब्द बोले। ऐसे बत्तीस अक्षरों को इकट्ठा करके श्लोक बना दिया। ऐसा छल शास्त्रों ने किया है।

लवा लवाना अर्थ जुजवा, द्वादसना प्रकार।
मूल अर्थने मुझवी, बांध्या अटकले अपार।। ६ ।।

एक-एक अक्षर के छोटे-छोटे भेद निकालकर बारह तरह की बोली से अलग-अलग अर्थ किए और इस तरह से मूल भाव को छिपाकर अटकल का अपार ज्ञान भर दिया है।

अर्थने नाखवा अवलो, गमोगमा ताणे।
मूढोने समझाववा, रेहेस वचमां आंणे।। ७ ।।

अर्थ को उलटा, सीधा करने के लिए अपनी-अपनी तरफ खींचते हैं और मूर्खों को समझाने के लिए बीच में कहानियां सुनाते हैं।

एवी आंकडियो अनेक मांहें, ते ताणे गमां बार।
रंचक रेहेस आंणी मधे, बांध्या बुधे विचार।। ८ ।।

मनगढंत कहानियां सुनाकर बीच में थोड़ा-सा सार ज्ञान सुनाते हैं। इस तरह से संसार को बांध रखा है।

अखर एक बारे गमां बोले, एवा श्लोक मांहें बत्रीस।
ए छल आंणी अर्थ आडो, खोले छे जगदीस।। ९ ।।

एक अक्षर मात्रा के कारण बारह तरह से बोला जाता है और ऐसे बत्तीस अक्षर इकट्ठे करके एक श्लोक बनता है। फिर ऐसा छल बीच में लाकर अनेक अर्थ करके परमात्मा को खोजते हैं।

एवा छल अनेक अर्थ आडो, ते अर्थ मांहें कई छल।
अखरा अर्थ छल भावा अर्थ आडो, पछे करे भावा अर्थ अटकल।। १० ।।

ऐसे अनेक तरह के छल से भरे अर्थ कर और उन अर्थों में भी कई तरह के छल करके परमात्मा को अर्थ की आड़ में छिपा देते हैं। अक्षर का अर्थ छल से भरा होता है और इसमें भावार्थ छिप जाता है। फिर पीछे भावार्थ को अटकल (अनुमान) से कहते हैं।

ते बेसे पंडित विष्णु संग्रामे, एक काना ने कडका थाय।
मांहोंमांहें वढी मरे, एक मात्र न मेलाय।। ११ ।।

शास्त्रार्थ में ऐसे पण्डित लोग बैठकर झगड़ते हैं और एक काना (मात्रा) के टुकड़े के पीछे (सन्धि विच्छेद में) झगड़ते हैं और वह आपस में लड़ मरते हैं, परन्तु एक मात्रा को नहीं छोड़ते।

वादे वाणी सीखे सूरा, सुध बुध जाए सान।
स्वांत त्रास न आवे सुपने, एहवुं व्याकरण गिनान।। १२ ।।

ऐसे विद्वान लोग वाद-विवाद की वाणी को सीखते हैं और अपने होश-हवास को गवां देते हैं। सपने में भी इन्हें शान्ति तथा दया नहीं आती। ऐसा व्याकरण का ज्ञान है।

Nijanand App

ते व्यासे कीधी मोटी, दीधूं छलने मान।
तेमां पंडित ताणोंताण करे, मांहें अहंमेव ने अग्नान।। १३ ।।

इस तरह से व्यासजी ने छल (माया) को और सम्मान दे दिया। इसमें पण्डित लोग अहंकार व अज्ञान के कारण आपस में खींचातानी करते हैं।

ए छल पंडित भणीने, मान मूढोमां पामे।
ए मूढ पंडित सहु छलना, भूलव्या एणी भोमे।। १४ ।।

ऐसी छल की वाणी को पण्डित पढ़कर मूर्खों के बीच इज्जत पाते हैं। मूर्ख, पण्डित सभी माया के हैं और इस भूमि में भूले पड़े हैं।

आ प्रगट जे प्राकृत, जेमां छल कांई न चाले।
एमा अर्थ न थाय अवलो, ते पंडित हाथ न झाले।। १५ ।।

यह हिन्दुस्तानी भाषा जिसमें कोई चालाकी नहीं चलती, स्पष्ट है। इसमें कोई उलटे अर्थ नहीं होते। इसलिए हिन्दुस्तानी भाषा में पण्डितों की जरूरत नहीं है (इस भाषा को पण्डित लोग नहीं पढ़ते क्योंकि इसमें उनके पेट पालने का छल-कपट नहीं है)।

आ पाधरी वाणी मांहें प्रगट, एक अर्थ नव दाखे।
वचन वलाके त्यारे आणे, ज्यारे छलमां नाखे।। १६ ।।

यह हिन्दुस्तानी भाषा सीधी सरल है। पण्डित इस भाषा के एक शब्द में उलट फेर नहीं कर सकते, क्योंकि उन्हें छलना होता है तभी वह उलटे वचन लाते हैं, इसलिए वह इसे अपनाते नहीं।

ए छल रामत जेहेनी ते जाणे, बीजी रामत सहु छल।
ए छलना जीव न छूटे छलथी, जो देखो करता बल।। १७ ।।

यह छल का खेल जिसका है वही इसको जानता है। दूसरे सब खेल झूठे हैं। इसलिए इन माया के जीवों को देखो। यह ताकत तो लगाते हैं, किन्तु छल से नहीं छूट सकते।

पेहेली मुझवण कही वैराटनी, बीजी वेदनी मुझवण।
ए संखेपे कही में समझवा, ए छल छे अति घन।। १८ ।।

पहले विराट (ब्रह्माण्ड) की उलझन बताई। दूसरी यह वेद की उलझन है। थोड़े में समझने के लिए मैंने कही है (जैसे यह छल से ही भरा संसार है)।

मुख उदर केरा कोहेडा, रच्या ते मांहें सुपन।
सुध केहेने थाय नहीं, मांहें झीले ते मोहना जन।। १९ ।।

एक मुख का अर्थात् वेद का, दूसरा उदर का अर्थात् पेट का (शरीर का) कोहेड़ा (धुन्ध) है। यह सपने के संसार में रचे गए हैं। इनकी खबर किसी को होती नहीं है। इस मोह सागर में मोह के जीव मगन मस्त होकर रहते हैं।

वैराट वेदें जोई करी, सेवा ते कीधी एह।
देव तेहेवी पातरी, संसार चाले जेह।। २० ।।

श्रीजी कहते हैं, हे साथजी! विराट और वेद को देखकर मैंने आपकी यह सेवा की है। (अर्थात् इनकी पहचान कराई है)। परन्तु यह संसार कहता है कि जैसा देव वैसी पूजा। इसी में संसार चलता है।

Nijanand App

बोल्या वेद कतेब जे, जेहेनी जेटली मत।
मोह थकी जे उपना, तेहेने ते ए सहु सत।। २१ ।।

वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद), कतेब (अंजील, जंबूर, तौरेत, कुरान) में जितनी जिसकी बुद्धि में आया उतना ही उन्होंने ज्ञान दिया। जो निराकार से पैदा हुए हैं उनके लिए यही सच्चा ज्ञान है।

लोक चौदे जोया वेदे, निराकार लगे वचन।
उनमान आगल कही करी, वली पडे ते मांहें सुंन।। २२ ।।

वेदों ने निराकार तक चौदह लोकों में देखकर बयान किया। आगे अटकल (अनुमान) से कहकर शून्य में समा गए।

प्रगट देखाडूं पाधरा, पांचे ते जुजवा तत्व।
रमे सहु मन मोह मांहें, सहु मननी उतपत।। २३ ।।

श्रीजी कहते हैं कि मैं तुम्हें सीधा रास्ता बताता हूं। यह पांचों तत्व अलग-अलग हैं। सारे संसार के जीव अपने मन के मोह के जाल में भटक रहे हैं। यह सारा व्याकरण का ज्ञान उनके मन की उत्पत्ति है।

सकल मांहें व्यापक, थावर ने जंगम।
सहु थकी ए असंग अलगो, ए एम कहावे अगम।। २४ ।।

सब चल (जंगम) और अचल (स्थावर) में यह मन व्यापक है। परमात्मा सबसे अलग है। इस तरह से वेद इसको अगम कहते हैं।

दसो दिसा भवसागर, जुए ते एह सुपन।
आवरण पाखल मोहनूं, निराकार कहावे सुंन।। २५ ।।

दसों दिशाओं में मोह का सागर भरा हुआ है। देखो तो यह सब सपना है। इसके चारों ओर मोह का आवरण है। यह निराकार और सुंन (शून्य) कहा जाता है।

ए ब्रह्मांडनो कोई कोहेडो, रामत चौद भवन।
सुर असुर कई अनेक भांते, छलवा छल उतपन।। २६ ।।

यह ब्रह्माण्ड ऐसी कोई धुन्ध (कोहरा) है, जिसमें चौदह लोकों के जीव खेलते हैं। देव और दानव (राक्षस), आदि अनेक जाति के लोग इस माया में ठगने वाले पैदा किए गए हैं।

वनस्पति पसु पंखी, मनख जीव ने जंत।
मछ कछ जल सागर साते, रच्यो सहु परपंच।। २७ ।।

पेड़, पौधे, वन, पशु, पक्षी, आदमी, जीव, जन्तु, मछली, कछुआ, सातों सागर—यह सब झूठ के बने हैं।

जीवों मांहें जिनस जुजवी, उपनी ते चारे खान।
थावर जंगम सहु मली, लाख चौरासी निरमान।। २८ ।।

जीवों में भी अलग-अलग जातियां हैं। इनके चार प्रकार हैं—(अण्डज, पिण्डज, उद्भिज, स्वेदज)। इनमें चल और अचल सब मिलकर चौरासी लाख योनियां हैं।

Nijanand App

कोई वैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
रमे पांचेना मांहें पुतला, बीजा सागर आडी पाल।। २९ ।।

अपने-अपने कर्मों से कोई बैकुण्ठ, कोई यमपुरी, कोई स्वर्ग और कोई पाताल जाते हैं। यह सब पांच तत्वों के आकार में ही घूमते रहते हैं और दूसरे भवसागर से आगे नहीं जा सकते।

ए रामतनो वेपार करे, तेहेने माथे जमनो दंड।
कोइक दिन स्वर्ग सोंपी, पछे नरक ने कुंड।। ३० ।।

इस खेल में जो छल-कपट करते हैं (धन्धा करते हैं) उनको यम के दूतों की मार पड़ती है। वह कुछ दिन स्वर्ग में रहकर पीछे नरक के कुण्डों में जाकर यातना (कष्ट) सहते हैं।

तेरे लोके आण फरे, संजमपुरी सिरदार।
जे जाणे नहीं जगदीसने, ते खाय मोहोकम मार।। ३१ ।।

तेरह लोकों में बैकुण्ठ के सिरदार (मालिक) विष्णु भगवान का हुक्म चलता है। जो उनको नहीं पहचानता, उनको असह्य (सहन न हो सकने वाली) मार पड़ती है।

ए रामतनी लेव देव मेली, करे वैकुंठनों वेपार।
ए जीवोंनी मोच्छ सतलोक, कोई पार निराकार।। ३२ ।।

इस संसार में जो माया को छोड़कर बैकुण्ठ की भक्ति करते हैं, उन जीवों को बैकुण्ठ में मुक्ति मिलती है। कोई उससे पार जाते हैं तो निराकार में समा जाते हैं।

चौदलोक इंडा मधे, भोम जोजन कोट पचास।
अष्ट कुली पर्वत जोजन, लाख चौसठ वास।। ३३ ।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में पचास करोड़ योजन जमीन है। इसमें आठ करोड़ योजन में पहाड़ हैं और चौसठ लाख योजन में बस्ती। बाकी सब जल है।

पांच तत्व छटी आतमां, सास्त्र सर्व मां ए मत।
ए निरमाण बांधीने, लई सुपन कीधूं सत।। ३४ ।।

पांच तत्व, छठी आत्मा है। यह सभी शास्त्रों का मत है। इसका हिसाब लगाकर स्वप्न को सत (सत्य) की तरह बता दिया। अर्थात् सपने में ब्रह्माण्ड को हिसाब में लाकर सच्चा बता दिया।

जोया ते साते सागर, अने जोया ते साते लोक।
पाताल साते जोइया, जाग्या पछी सहु फोक।। ३५ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा और सातों लोकों को देखा। (सात सागर—लवण, रस, घृत, दधि, दूध, शराब का और मीठे जल का; सातों लोक—भू लोक, भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर्लोक, जन लोक, तप लोक, सत लोक) सात पाताल (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) को देखा। जागृत ज्ञान से जब जागृत होकर देखा तो पाया कि यह सब मिट जाने वाले हैं।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९३ ।।

अवतारोंना प्रकरण

एह छल तां एवो हुतो, जेमां हाथ न सूझे हाथ।
द्रष्ट दीठे बंध पडे, तेमां आव्यो ते सघलो साथ।। १ ।।

यह माया का ऐसा अंधेरे (अज्ञान) का ब्रह्माण्ड था, जिसमें एक हाथ को दूसरा हाथ न सूझता था। ऐसी माया में लोग लिप्त थे। ऐसे ब्रह्माण्ड में अपने सुन्दरसाथ आए।

Nijanand App